Date: 01/11/25

MJC-1

Topic – संस्कृति : विशेषता

→ संस्कृति में अनुकूलन का गुण है – प्रत्येक स्थान की सांस्कृतिक विशेषताएँ इस प्रकार होती हैं जिनकी सहायता से वहाँ के भौगोलिक और सामाजिक पर्यावरण से अनुकूलन किया जा सके।

उदाहरण: टुण्ड्रा अथवा ध्रुव प्रदेशों में रहने वाले लोगों की संस्कृति इस प्रकार की होती है जिससे वे ठण्डे तूफानों के बीच रह सके जबकि भारतीय संस्कृति की विभिन्न विशेषताएँ हमारी भौगोलिक परिस्थितियों से अनुकूलन करने के लिए उपयोगी है।

Note: संस्कृति में माँग के अनुसार परिवर्तित होने का गुण होता है। इसलिए मनुष्य को सबसे अधिक अनुकूलनशील प्राणी माना जाता है।

→ संस्कृति में आवश्यकता-पूर्ति का गुण है – संस्कृति की प्रत्येक इकाई व्यक्ति की किसी न किसी आवश्यकता को अवश्य पूरा करती है। कभी-कभी संस्कृति का कोई अंग बाहरी रूप से बेकार मालूम होता है, लेकिन सम्पूर्ण सांस्कृतिक ढाँचे में उसका महत्व अवश्य होता है।

उदाहरण: लोहे की एक सामान्य तीली बिल्कुल निरर्थक प्रतीक होती है, लेकिन एक साइकिल की सम्पूर्ण संरचना में इसका महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी प्रकार धर्म का कोई अकेला तत्व ऊपर से बेकार मालूम होता है लेकिन धर्म की सम्पूर्ण संरचना में उसका अवश्य ही एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिस प्रकार शरीर का छोटा से छोटा अंग भी किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति करता है वैसे ही संस्कृति का भी कोई अंग निरर्थक नहीं है।

PDF by
Dr. Nitish Vardhan
Sociology